Various Dimensions of Social Culture

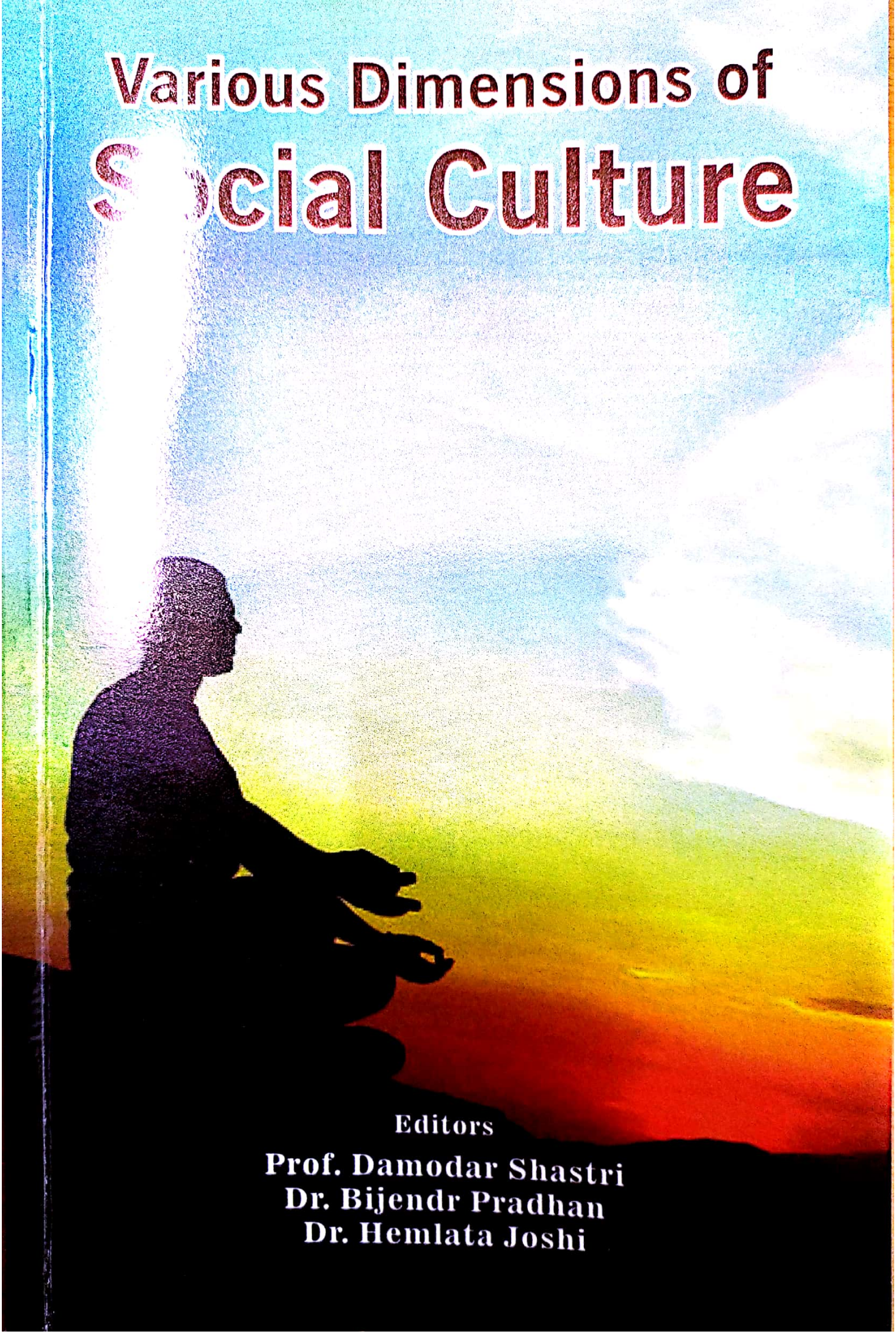

Editors
Prof. Damodar Shastri
Dr. Bijendr Pradhan
Dr. Hemlata Joshi

Scanned by CamScanner

Various Dimensions of Social Culture

ISBN 978-93-83634-46-0

Editing Teem 2019

Editors: Prof. Damodar Shastri
Dr. Bijendra Pradhan
Dr. Hemlata Joshi

First Edition: September, 2019

Price: 350/-

Published by: Jain Vishva Bharati Institute
(Deemed University)
Ladnun-341306 (Rajasthan) India
www.jvbi.ac.in

Printed by: Nagar Printing Press, Kota

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

Section A- English Articles

Climate Change and Sustainability in Post Paris Agreement Era 03-09

Ankit Sharma

Solar energy –A Renewable energy resource 10-15

Mukul Saraswat

Enhancing Professional Capacity to Literate B.Ed. Trainees with ICT in Teaching Pedagogy: A Study 16-27
(With reference to National Policy on Education, 2016)

Dr. Bhabagrahi Pradhan

Role of ICT in Social Work Education & Practices 28-37

Dr. Pragati Bhatnagar

Prospects of Inclusive Education 38-48

Dr. Manish Bhatnagar

Challenges for Sustainable Development: Global Perspective 49-56

Dr. Vikas Sharma

खण्ड – ब : हिन्दी आलेख

1. चेतना और कायोत्सर्ग का अन्तः–सम्बन्ध : जैनदर्शन के संदर्भ में 59–66

डॉ. योगेश कुमार जैन

2. आतापना योग : एक विशिष्ट जैन साधना 67–75

डॉ. सुनीता इन्दौरिया

3. वेदों में सृष्टिविज्ञान के सूत्र 76–86

डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज

Scanned by CamScanner

वेदों में सृष्टिविज्ञान के सूत्र

डॉ. सत्यनारायण भारद्व

सहायक आ
प्राकृत एवं संस्कृत वि
जैन विश्वभारती संस्थान, ल

सारांश

भारतीय संस्कृति में वेदों का स्थान अत्यन्त उत्कृष्ट है साथ ही वि साहित्य के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथों के रूप में भी वेदों का स्थान निता गौरवपूर्ण है। वेद किसी एक साहित्यिक रचना का नाम नहीं है, वरन् भारत मनीषियों ने इन्द्रियदमन पूर्वक वर्षों के स्वाध्याय और तप से जिस ज्ञानरा को प्राप्त किया था, उसका संग्रह वेदों में उपलब्ध होता है। वेद के द्वारा मनुष्य आत्मा, परमात्मा और संसार की उत्पत्ति एवं उसके स्वरूप को जान में समर्थ होता है। आज हमारे समक्ष अनेक यक्ष प्रश्न उपस्थित हैं उनमेंसे सब महत्त्वपूर्ण प्रश्न ये हैं कि इस जगत् का निर्माण कैसे हुआ? यह सृष्टि कैसे बनी कौन से प्रमुख तत्त्वों के संयोग से इस जगत् का निर्माण हुआ है? सृष्टि–प्रक्रि में सर्वप्रथम किसका निर्माण हुआ? अनेक प्रश्न हैं, जो आज विश्व के सामने उपस्थित हैं और अनेक विद्वान् आज इन प्रश्नों के उत्तर ढूढ़ने का प्रयास क रहे हैं और वेद उनके इन प्रश्नों को सम्यक् प्रकार से समाधान देने में सम प्रतीत होते हैं।

सृष्टि की उत्पत्ति के सन्दर्भ में अनेक मत प्रचलित हैं। कोई इस जग को स्वप्नवत् मिथ्या मानता है तो कोई बिना निमित्त के ही सृष्टि की उत्प मानता है। कोई जगत् को शून्य से उत्पन्न मानता है तो कोई इस जगत् क अनादि–अनन्त मानता है लेकिन वेदों के अनुसार इस सृष्टि का कोई कर्त्ता और यह जगत् सप्रयोजन है। वेदों में सृष्टि–उत्पत्ति का क्रम प्राप्त होता है ए अनेक ऐसे सूत्र प्राप्त होते हैं, जिनसे सृष्टि–उत्पत्ति की प्रक्रिया को समझ में आसानी हो जाती है।

मुख्य शब्द– वेद, सृष्टिविज्ञान, सृष्टि–प्रक्रिया, सृष्टि–उत्पत्ति में कारण, महाभूत तन्मात्राएं।

Scanned by CamScanner